अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

"राम की शक्तिपूजा में नारी विषयक दृष्टिकोण"

डॉ तृप्ति सिंघल, सह प्रवक्ता हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय, मोमासर श्रीडूंगरगढ़

शोध–सारः– 'राम की शक्तिपूजा' एक ऐसी रचना है जिस पर बहुत अधिक शोध कार्य हो चुका है और निरन्तर हो रहा है। जितना इस रचना पर शोध किया जाता है उतन ही और नवीन तथ्य इसमें वृद्धि कर जाते है। 'राम की शक्तिपूजा' की अनेक प्रकार से नवीन व्याख्याएं और स्थापनाएं की जा चुकी है। नारी के संदर्भ में राम की शक्तिपूजा की व्याख्या करना इस शोध पत्र का उद्देश्य है। निराला कृत इस रचना के केन्द्रीय भाव में सीता की मुक्ति और इस हेतु रावण से युद्ध है। रचना के प्रारम्भ में सीता है और सीता ही राम की प्रेरणा बनती ह। युद्ध में विजय प्राप्त करने हेतु राम शक्ति की अराधना करते हैं और उनके द्वारा ली गई परीक्षा में सफल तभी होते हैं जब उन्हें अपनी माता क संबोधन राजीव–नयन का स्मरण होता है। अंत में शक्ति राम की साधना से प्रसन्न हो– 'होगी जय, होगी जय' कहकर उनके भीतर प्रवेश कर जाती है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध पत्र में निराला द्वारा रचित 'राम की शक्तिपूजा' में नारी क विभिन्न स्वरूप पत्नी माता, देवी आदि की महान भूमिका को उल्लेखित करने का प्रयास किया गया ह।

1. पत्नी स्वरूपा नारो (राम की पत्नी सीता)
2. मातृ–स्वरूपा नारो (हनुमान की माता अजना, कौसल्या)
3. स्वतंत्रता प्रतीक भारतमाता
4. शक्ति–स्वरूपा नारी (पुरूष की शक्ति भी)

''नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास–रजत–नग पगतल में।
पीयूष स्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुंदर समतल में''।।

–जयशंकर प्रसाद कामायनी

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

छायावादी कवियों जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत व निराला तीना ने ही नारी की महती भूमिका का उल्लेख अपने–अपने काव्यों में किया है। जयशंकर प्रसाद ने कामायनी में जिस नारी को केवल श्रद्धा कहकर उसकी महानता को प्रतिष्ठित किया है उसी नारी को राम भी शक्तिपूजा में निराला ने कोमल और कठोर दोनो रूप तथा मातृस्वरूपा और पत्नी स्वरूपा आदि रूपों में स्थान–स्थान पर उल्लेखित किया है। राम की शक्तिपूजा में नारी ही केन्द्र में है, यदि ऐसा कहा जाए तो भी अतिशयोक्ति न होगी। शीषक से ही यह सिद्ध हो जाता है कि पूरी रचना के केन्द्र में शक्ति अर्थात नारी के महत्व को स्वीकार कर उसे अपने पक्ष में करने हेतु उसकी अराधना की गई है। राम की शक्तिपूजा में एक नारी की मुक्ति के लिए एक नारी की ही अराधना की गई है। इस कृति में आए नारी के भिन्न–भिन्न स्वरूपों को निम्न बिन्दुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है।

1. **पत्नी स्वरूपा नारी**:–

महाकाव्यात्मक औदात्य से युक्त दीर्घ कविता राम की शक्तिपूजा के केन्द्र में 'सीता की मुक्ति' को समस्या ह। सीता, राम को पत्नी जो रावण द्वारा अपहृत कर ली गई है, उसी की मुक्ति के लिए राम–रावण युद्ध हो रहा है और राम संघर्षरत है। नंदकिशोर नवल का कहना है ''शक्तिपूजा' में सीता के प्रति राम का प्रेम और उनकी मुक्ति का प्रयास साधन है, रावण के साथ राम का युद्ध, उनकी निराशा, हनुमान का उध्वगमन, शक्तिपूजा आदि गौण लेकिन कथा का अनिवार्य अंग बनकर आए हैं। राम की निराशा और निरुपायता ही उन्हे वह मानवीय व्यक्तित्व प्रदान करती है, जिसके अंधकार में उनका वह पत्नी–प्रेम दमकता है, जिसकी मिसाल न फिर पुराणों में है न लोककथाओं में और न इतिहास में''।[1]

रचना के प्रारम्भ में राम–रावण का युद्ध अनिर्णित रह जाता है, राम और रावण दोनों ही शक्तिशाली योद्धाओं ने अपने कौशल से युद्ध लड़ा किन्तु युद्ध किसी निर्णायक स्थिति पर नही पहुंचा और सूर्यास्त हो गया। दोनों दल की सेनाएं अपने–अपने शिविर को लाट पड़ी। अगले दिन होने वाले युद्ध की रणनीति बनाने के लिए राम की सेना के सेनापति अंगद, हनुमान, जाम्बवान, विभोषण और राम पर्वत की शीला पर बैठ गए। आज के युद्ध का भयरूपी अंधकार वातावरण में भी

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

पसर गया था, किन्तु एक आशारूपी मशाल अभी भी जल रही थी। राम के हृदय के भीतर रावण–जय का जो भय था, वही अंधकार के रूप मे उनके हृदय को आच्छादित कर रहा था। अगले दिन होने वाले युद्ध मे स्वयं की हार राम के मन को विकल कर रही थी कि तभी अंधकार में विद्युत प्रकाश की भांति सीता की स्मृति चमक उठीः–

''जागी पृथ्वी–तनय–कुमारिका छवि अच्युत
देखते–हुए निष्पलक, याद आया उपवन
विदेह का, –प्रथम स्नेह का लतान्तराल मिलन
नयनों का –नयनों से गापन–प्रिय सम्भाषण''

यह स्मृति राम के निराशामय मन में इतना उत्साह भर गयी किः–

''सिहरा तन, क्षण भर भूला मन, लहरा समस्त,
हर धनुभग को पुनर्वार ज्या उठा हस्त,
फटी स्मिति सीता–ध्यान–लीन राम के अधर,
फिर विश्व–विजय–भावना हृदय में आयी भर''

पत्नी की स्मृति राम के हृदय में उत्साह भरने वाली शक्ति के रूप में विद्युत बन चमक उठी। राम की शक्तिपूजा का केन्द्रीय भाव जहाँ सीता की मुक्ति है वहीं सीता हो वह शक्ति है जो राम को निराशा से आशा की ओर धकेलती है।

जब माता शक्ति रावण का साथ देती है, यह जानकर राम निराश हो जाते हैं और कल होने वाले युद्ध में पहले से ही हार मान लेते हैं तब भो विभीषण राम को जानको की ओर उनके कतव्य को याद दिलाते हुए उन्हें प्रेरित करते हैः–

"कितना श्रम हुआ व्यर्थ, आया जब मिलन–समय,
तुम खींच रहे हो हस्त जानको से निर्दय
रावण ? रावण–लम्पट, खल–कल्मष–गताचार
जिसने हित कहते किया मुझे पाद प्रहार,
बैठा उपवन में देगा दुःख सीता को फिर''

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

शक्ति द्वारा जब राम की परीक्षा ली जाती है एक राम इस बात से व्यथित हो जाते हैं कि अब किस प्रकार से सीता की मुक्ति होगी और वह कह उठते हैं– जानको! हाय उद्धार प्रिया का हो न सका।'' इस प्रकार सीता की मुक्ति का प्रयास ही पूरी कविता का केन्द्र ह, सीता राम के मन की वह शक्ति है जो उनके निराश मन में उत्साह भर देती ह। ''खिंच गये दृगों में सीता के राममय नयन'' पंक्ति में पति–पत्नी क प्रेम का अति सुंदर चित्र निराला जी ने खोंचा है। सीता की स्मृति राम को बार–बार आती है और स्मृति संकेत है कि राम की शक्तिपूजा के राम के लिए सीता की मुक्ति कितनी अनिवार्य है।

2. मातृ–स्वरूपा नारीः– माता अंजना और माता कौसल्या के संदर्भ में

राम की शक्तिपूजा मे पत्नी के रूप मे सीता जिस प्रकार से उत्साह का संचार करतो है उसी प्रकार माता के रूप में कौसल्या की स्मृति भी राम के थके मन में ऊर्जा का संचार कर उनकी अराधना को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती ह। जब राम द्वारा की गई अराधना का अतिम चरण होता है तब शक्ति अंतिम इन्दीवर चुरा ले जाती है। अराधना के चरम स्तर पर पहुँचने के बाद राम जब अंतिम नीलकमल माता शक्ति को अर्पित करने हेतु अपना हाथ आग बढ़ाते है तो पाते हैं कि वहां नील कमल नही है, यह देखकर वे व्यथित हो जाते है किन्तु उनका एक मन जो अभी थका ना था, में माता कौसल्या की स्मृति जागती है–

''राम में जगी स्मृति हुए सजग पा भाव प्रमन
यह है उपाय कह उठे राम ज्यों मन्दित घन–
कहती थीं माता मुझे सदा राजीव–नयन
दो नील–कमल हैं शेष अभी, यह पुरश्चरण
पूरा करता हूँ देकर मात एक नयन''

इस प्रकार राम को साधना के चरम पर पहुँचाने का साधन बनती ह उनकी माता कौसल्या। राम अराधना की अंतिमावस्था में जहाँ वे ना पीछे हट सकते है और ना ही आगे बढ़ रहे हैं, ऐसी असमंजस में स्थिति में माता के शब्दों की स्मृति उन्ह वह मार्ग प्रदान करती है जिस पर चलने का निश्चय ही उन्हें साधना के अंतिम लक्ष्य पर पहुंचाकर विजयी बना देता है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

जिस प्रकार राम को उनकी माता की स्मृति एक नवीन मार्ग दिखलाकर उनमें आशा व ऊर्जा भर देती है उसी प्रकार हनुमान की माता उन्हें विनाश के मार्ग पर जाने से रोक देती हैं। अपने आराध्य राम के नेत्रों से बहने वाले आँसुओ को देखकर हनुमान इतने क्रोधित हो जाते हैं कि वे महाकाश को ही लीलने हेतु चल पड़ते हैं और विनाशकारी स्वरूप धारण कर लेते है। तभी शिव की सलाह पर शक्ति माता अंजना के रूप का सहारा लेकर हनुमान को विनाश करने और भक्त और सेवक की सीमाएँ समझाने हेतु उनके सामने प्रकट हो जाती ह–

''बोलीं माता– तुमने रवि को जब लिया निगल
तब नहीं बोध था तुम्हें, रहे बालक केवल,
यह वही भाव कर रहा तुम्हे व्याकुल रह–रह
यह लज्जा को बात है कि माँ रहती सह–सह,
यह महाकाश है जहाँ वास शिव का निर्मल
पूजते जिन्हें श्रीराम उसे गसने को चल
क्या नहीं कर रहे तुम अनर्थ ? सोचो मन में
क्या दो आज्ञा ऐसी कुछ श्री रघुनंदन ने ?
तुम सेवक हो, छोड़कर धर्म कर रहे कार्य –
क्या असम्भाव्य हो यह राघव के लिए धार्य ?
कपि हुए नम्र, क्षण में माता–छवि हुई लीन,
उतरे धीरे – धीरे गह प्रभुपद हुए दीन।''

उपर्युक्त पंक्तियों में माता के रुप में नारी के भीतर इतनी क्षमता है कि वह अपने पुत्र को डाँट–फटकार कर, प्रबोधन देकर उसे गलत मार्ग पर जाने से रोककर सही मार्ग की ओर प्रवृत करती है। माता अंजना अपने पुत्र हनुमान को समझाती है कि राम के अराध्य शिव का जहाँ वास है, तुम उसी आकाश को ग्रसित करने चले हो क्या यह अनथ नहीं है? और यह कहकर उन्हें फटकार भी लगाती है कि यह सब करने की आज्ञा क्या तुम्हे श्रीराम ने दो है? अगर ऐसी आज्ञा तुम्हें अपने आराध्य से नहीं मिली तो फिर ऐसा करना अधर्म है क्योंकि सेवक का कार्य

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

अपने मालिक की आज्ञानुसार कर्म करना है। यदि तुम राम की आज्ञा के बिना ऐसा विनाशकारी कार्य करोगे तो क्या राम को यह स्वीकार होगा ? माता का ऐसा प्रबोधन सुनकर हनुमान अपने क्रोध के स्तर से धीरे– धीरे नीचे उतरने लगे।

इस प्रकार जहां माता एक ओर पुत्र को उसके कर्तव्य का बोध और उसकी सीमाओं का ज्ञान करवाकर उसे विनाशकारी मार्ग पर जाने से रोकती है वही उचित मागदर्शन भी करती ह। माता के रूप में नारी की महती भूमिका को इस रचना में बड़ी कुशलता से दिखलाया गया ह।

3. स्वतंत्रता प्रतीक भारतमाताः–

कतिपय आलोचकों ने राम की शक्तिपूजा का केन्द्रीय भाव भारतमाता की मुक्ति माना है उनका मानना है कि राम का समस्त कार्यव्यापार भारतमाता की मक्ति के लिए ही है। ''इस संबंध में जनकवि धूमिल ने शक्तिपूजा को व्याख्या सन् 1962 के भारत–चीन सीमा–संघर्ष के परिप्रेक्ष्य में की है और भारत का आरोपण राम में किया है। चीन को रावण के रूप में देखा है।'' सीता भी मुक्ति प्रतीक है भारतमाता की मुक्ति की। अंग्रेजी शासकों को रावण के प्रतीक के रूप में, भारतमाता की स्वतंत्रता को सीता की मुक्ति के प्रतीक के रूप में तथा भारत की जनता जो भारतमाता की स्वतंत्रता हेतु संघषरत है, राम के प्रतीक के रूप में इस कृति में देखे जा सकते हैं। भारतमाता को स्वतंत्रता की आकांक्षा जनमानस में विदेशी शासका को अपने देश से बाहर निकालने हेतु उत्साह व ऊर्जा का संचार करती है। यदि पूरी कविता के केन्द्र में भारतमाता की मुक्ति को मान लें तो कविता के केन्द्र म नारी की भूमिका ही फिर से महत्वपूर्ण हो जाती है।

4. नारी शक्ति–स्वरूपा :–

राम की शक्तिपूजा शीर्षक में ही शक्ति केन्द्रित है और नारी वह शक्ति है जिसके पक्ष में होने से पुरुष विजयी हो जाता है और शक्ति को अपने पक्ष में करने हेतु पुरुष उसकी अराधना करता है। राम की शक्तिपूजा के प्रारम्भ में जहाँ शक्ति रावण के पक्ष में होकर उसे विजयो बनाने में अपना सहयोग प्रदान कर रही हैं, वहीं रचना के अंत में धर्मपुरुष राम के द्वारा की गई मौलिक अराधना से प्रसन्न हो राम का विजयी

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

होने का आशीर्वाद देकर उनके मुख में ही लीन हो जाती हैं। शक्ति के क्रोधित और कोमल दोनो रूपों को निराला जी ने इस रचना में चित्रित किया है। रचना के प्रारम्भ में रावण जो अधर्मी, अत्याचारी और अनाचारी है, फिर भो उसकी अराधना के वश में हो शक्ति उसका साथ देती है। उसे अपने अक में छिपा राम द्वारा किए गए सभी प्रहारों का नाश करती हुई रावण को विजयी बनाने में उसका सहयोग करती ह और धर्मपरायण होते हुए भो राम का शक्ति का विरोध सहन करना पड़ता है। रचना में शक्ति का प्रथम दर्शन तब होता है जब राम कल होने वाले युद्ध से भयभीत और निराश है तभी सीता की स्मृति उनके हृदय में विश्व–विजय की भावना भरती है, जैसे ही उनमें उत्साह का संचार होता है उन्हें रण क्षेत्र की स्मृति हो आती है–

" फिर देखी भीमा– मूर्ति आज रण देवी जो
आच्छादित किये हुए सम्मुख समग्र नभ को
ज्योतिर्मय अस्त्र सकल बुझ–बुझकर हुए क्षोण,
पा महानिलय उस तन में क्षण में हुए लीन।''

राम को शक्ति का प्रथम परिचय हुआ तब शक्ति रावण के पक्ष में राम के दिव्य अस्त्रों को क्षोण कर रही थी। शक्ति के महास्वरूप ने समस्त नभ को आच्छादित कर लिया था। शक्ति क इस स्वरूप की स्मृति ने राम के नेत्रो को सजल कर दिया था और जिसके कारण राम के हृदय में निराशा के भावो को प्रश्रय मिला। विभीषण के धिक्कारने और युद्ध में प्रवृत करने हेतु राम को कहे गये कटु शब्दों पर भी राम की कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई, केवल कुछ समय मौन के पश्चात–

''कुछ क्षण तक रहकर मौन सहज निज कोमल स्वर,
बोले रघुमणि–मित्रवर, विजय होगी न, समर
यह नहीं रहा नर–वानर का राक्षस रण,
उतरी महाशक्ति पा रावण से आमंत्रण,
अन्याय जिधर, है उधर शक्ति''

× × ×

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

आया न समझ में यह दैवी विधान
रावण, अधर्मरत भी, अपना, मै हुआ अपर''

अर्थात् रावण अधर्मी है फिर भी शक्ति उसका साथ दे रही हैं क्योंकि रावण ने अपनी अराधना से उन्हें प्राप्त किया है। यह कथन इन बातों की ओर संकेत करता है कि शक्ति के साथ के बिना अर्थात् बिना नारी के पुरुष को विजय असंभव है चाहे वह युद्ध क्षेत्र हो चाहे जीवन–संग्राम। प्रत्येक परिस्थिति में शक्ति स्वरूपा नारी ही पुरुष की विजय का कारण बनती है। दूसरी बात यह है कि यदि पुरूष चाहे वह अधर्मी हो या धर्मरत, यदि वह पूर्ण समर्पण भाव से शक्ति के प्रति समर्पित है तो शक्ति उसकी सहयोगिनी बन जाती है। वह स्वयं ढाल बन जाती है, राम कहते हैं–

"देखा है महाशक्ति रावण को लिये अंक,
लांछन को ले जैसे शशांक नभ में अशक,
देखने लगीं मुझे बँध गये हस्त,
फिर खिचा न धनु, मुक्त ज्यों बँधा मैं, हुआ त्रस्त''

जाम्बवान ने राम को शक्ति को अपने पक्ष में करने के लिए सलाह देते हुए कहा– 'आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर, शक्ति को करो मौलिक कल्पना'। जाम्बवान की सलाह ने राम को नवीन मार्ग प्रदान किया। राम ने शक्ति की मौलिक कल्पना करते हुए कहा 'सामने स्थिर जो वह भूधर, पार्वती कल्पना हैं इसकी मकरन्द–बिन्दु' और फिर शक्ति की अराधना में एक सौ आठ इन्दीवर समर्पित करने का निश्चय किया और इस तरह–

''चक्र से चक्र मन बढ़ता गया उध्व निरलस,
कर जप पूरा एक चढ़ाते इन्दीवर''

इस प्रकार एक सौ सात इन्दीवर चढ़ाने के पश्चात जैसे ही अंतिम नोलकमल चढ़ाने के लिए राम ने हाथ बढाया तो कुछ हाथ ना लगा क्योंकि शक्ति ने राम के समर्पण की परीक्षा हेतु उस अंतिम कमल को चुरा लिया। स्त्री शक्ति पुरुष का पूर्ण समर्पण चाहती है और इसे जाँचने हेतु परीक्षण भी करती है। राम को स्वयं के राजीवनयन होने का स्मरण होता है तब वे अपनी अराधना को पूर्ण करते हुए

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

समर्पण भाव से अपना एक नेत्र शक्ति को अर्पित करने को तत्पर होते हैं तभी शक्ति राम के इस समर्पण भाव से प्रसन्न हो प्रकट होकर कहती हैं–

''साधु, साधु, साधक धीर, धर्म–धन–धान्य राम
× × ×
होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन
कह महाशक्ति राम के बदन में हुई लीन''

निष्कर्षः–

इस प्रकार कहा जा सकता है कि निरालाकृत राम की शक्तिपूजा के केन्द्र में नारी है। एक नारी की मक्ति की कामना हेतु राम संघर्षरत होते हैं, एक नारी की स्मृति उन्हें निराशा के घनघोर बादलों में आशा की विद्युत कौंध प्रकाशित करती हैं, एक नारी को अपने पक्ष में करने हेतु व उस पूजनीय नारी की अराधना करते हैं और अराधना के अंतिम चरण में एक नारी के शब्दों का स्मरण ही उनकी अराधना पूर्ण करवाता है और अंत में एक नारी ही उन्हें 'विजयीभव' का विश्वास दिलाती है। इस तरह राम की शक्तिपूजा नारी के सहयोग से ही आगे विस्तार पाती है। अतः नारी के संदर्भ में राम की शक्तिपूजा की व्याख्या आधुनिक संदर्भों मे अति प्रासंगिक है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. राजेश्वर कुमार– राम की शक्तिपूजा और संशय की एक रात पाठ–पुनर्पाठ, प्रथम संस्करणः 2017 अनुज्ञा बुक्स, शाहदरा– दिल्ली प्रकाशक

2. नवल, नन्दकिशोर– राम की शक्तिपूजाः पुनर्विचार, अनुपम प्रकाशन

3. रामविलास शर्मा– राग–विराग–सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, (सम्पा.) लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

4. निराला– राम की शक्तिपूजा

5. वागीश शुक्ल– छन्द–छन्द पर कुकुम

6. नंदकिशोर नवल – निरालाः कवि छवि